International Research Vision (Int. Res. Vn.)
ISSN: 2454-3721
Volume 6 Issue 1: 1-3, 2020
Available online http://www.bioglobia.in

आतंकवाद और जन साझेदारी : एक अनुसंधात्मक विश्लेषण

गुंजन कुमारी
अतिथि शिक्षक, राजनीतिशास्त्र विभाग, के. एस. कॉलेज, लहेरियासराय,
जिला– दरभंगा – 846004, बिहार
Author's e-mail: dr.gunjan.dang81@gmail.com

Received: 02.09.2019 **Accepted:05.10.2019**

सारांश

आतंकवाद एक ऐसी मानसिकता है जिसमें आतंक, भय, दहशत और अन्य साधनों द्वारा लक्ष्यों की पूर्ति करने का सफल या असफल प्रयास किया जाता है। वैसे तो आतंकवाद की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है परंतु इसको परिभाषित करने का प्रयास पूर्व उचायुक्त जी0 पार्थसारथी, पूर्व राष्ट्रपति के0 आर0 नारायण और महात्मा गाँधी ने किया है। वहीं आतंकवाद से जुड़े बहुत सारे प्रश्न हमारी आंतरिक राजनीति की आवश्यकताओं से भी जुड़े हैं। वर्त्तमान आलेख इस विषय पर जन साझेदारी का एक अनुसंधात्मक विश्लेषण है जिसमें आतंकवाद के कारक, शिक्षा, सरकार की निष्क्रियता आदि विभिन्न पहलुओं के सरोकार पर आधारित सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है।

शोध बिंदू: *आतंकवाद, जन साझेदारी, शिक्षा, सरकार, साधन।*

शीर्षक विश्लेषण

आतंकवाद आधुनिक विश्व की नवीनतम अवधारणा बनकर उभरी है। आतंकवाद की प्रकृति विकृत होने के कारण इसमें स्वरूपों को निश्चित सीमा में तो नहीं बांधा जा सकता परंतु सीमित विस्तार अध्ययन की दृष्टि से अवश्य किया जा सकता है। इसके प्रकारों को हम निम्न भागों में बाँट सकते हैं।

(1) क्रान्तिकारी आतंकवाद (2) प्रतिक्रियावादी आतंकवाद (3) पुरातनपंथी आतंकवाद (4) साम्राज्यवाद विरोधी आतंकवाद (5) राज्य आतंकवाद (6) राज्य प्रायोजित आतंकवाद और (7) धार्मिक आतंकवाद आदि।

आतंकवाद के लिए जिम्मेदार लोग अमानवीय पाश्विक और निर्भय होते है इसीलिए उनके साथ किसी प्रकार की उदारता बरतना मूर्खता होती है।[1,2]

वर्त्तमान समय में आतंकवाद भारत में एक भयावह रूप धारण कर चुका है जो निश्चय रूप से राष्ट्र में व्याप्त असमानताओं का परिणाम है। भारत के दक्षिण में लिट्टे, उत्तर पूर्वाचल में ईसाई धर्मावलंबी, पंजाब में खाड़कू, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, आसाम, बिहार आदि राज्यों में नक्सली, गतिविधिया इसके उदाहरण हैं। यही नही हमारे देश में उच्च वर्ग के समुदायों द्वारा देश के निम्न वर्ग समूहों का शोषण कर उन्हें भय के वातावरण में जीवन जीने को विवश किया जाता रहा है। इन सारे विन्दुओं के परिपेक्ष्य में जन साझेदारी की व्याख्या और उसका विश्लेषण किया जाना अनिवार्य बन जाता है। भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश में जन साझेदारी के विभिन्न आयामों को सर्वेक्षण के माध्यम से प्रस्तुत करना ही आलेख का उद्देश्य है।

विश्लेषण की कार्य प्रणाली

इस हेतु एक सर्वेक्षण तैयार किया गया जिसके माध्यम से 400 उत्तरदाताओं जिनमें जनता के विभिन्न आयु, व्यवसाय, लिंग एवं शिक्षा स्तर का मत प्राप्त किया गया। उत्तरदाताओं के चयन का आधार विभिन्न राज्यों के व्यक्तियों को उचित प्रतिनिधित्व प्रदान करना था। प्रपत्र में आतंकवाद के कारणों, सरकार की भूमिका, पुलिस की भूमिका तथा आतंकवाद की समस्या से निपटने के विषयों पर प्रश्न पूछे गए। प्रपत्र में अधिकतर प्रश्नों में वैकल्पिक उत्तर दिये गये जिनमें से दिये गए उत्तरों में से

उत्तरदाताओं को उत्तर देना था तथा कुछ प्रश्नों के उत्तर, उत्तरदाता को स्वतंत्र रूप से लिखने का भी दिये गए थे। उत्तरों की सांख्यिकी गणना का प्रयोग में लाया गया। हालाँकि 400 की संख्या सीमित संख्या है फिर भी गवेषक के द्वारा सीमित संसाधन, समय और सीमाओं को ध्यान में रखते हुए अन्वेषणात्मक अध्ययन का प्रयास किया गया तथा समस्या के संबंध में निष्कर्ष निकालने का प्रयत्न किया गया है।

परिणाम और चर्चा

उत्तरदाताओं की आयु (18–35, 36–50 और 51 वर्ष से ऊपर), धर्म (हिन्दू, इस्लाम व अन्य), व्यवसाय (सरकारी नौकरी, निजी नौकरी, व्यवसाय, पुलिस अधिकारी व अन्य), लिंग (पुलिस व महिला) तथा शिक्षा का स्तर (10 वीं पास, 12 वीं पास, स्नातक पास, स्नातकोत्तर पास एवं व्यावसायिक योग्यता) में सभी के 400–400 सैम्पल लेकर सर्वेक्षण का अध्ययन व विश्लेषण किया गया। आतंकवाद की समस्या के कारणों एवं समाधान के विषय में जानने के लिए आतंकवाद के उत्तरदायी कारक (सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक व अन्य कारक), धार्मिक कट्टरता का आतंकवाद के लिए उत्तरदायी होना, शिक्षा प्रणाली व व्यवसायिक शिक्षा का अभाव एवं इससे आतंकवाद को बढ़ावा मिलने जैसे प्रश्न, सरकार की निष्क्रियता आतंकवाद को बढ़ावा मिलना जैसे प्रश्न, बाहरी देशों का हस्तक्षेप, सामाजिक वातावरण की जिम्मेदारी, आतंकवाद से निपटने में अक्षमता व पुलिस के प्रशिक्षण की कमी, जनता के स्तर पर किये जाने वाले प्रयास सरीखे सभी के 400–400 सेम्पुल्स का अवलोकन करने के बाद यह परिणाम सामने आया कि कहीं न कहीं छिटपुट रूप से उपरोक्त सारी परिस्थितियाँ जिम्मेदार रही हैं लेकिन बदलते व बढ़ते शैक्षिक, व्यावसायिक और विकासात्मक मानसिकता की वजह से धीरे–धीरे आतंकवाद कुछ खास मकसदों के लिए सिमट कर रह गया है। जिनमें मुख्यतः धार्मिक कट्टरता और उनके मनोवैज्ञानिक प्रयोगों का बरकरार प्रचलन, धर्म विशेष को भारत ही नही अपितु विश्व में स्थापित करने की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति और विकासशीलता को पथ भ्रष्ट करने की साजिश है।[3–5] परंतु विश्व ही नही बल्कि भारत में भी सत्ता लोलुपता हेतु राजनीतिक गिरावट और आतंकवाद जैसी भारत सहित विश्व के लिए अभिशप्त एवं ज्वलंत समस्या को सत्ता लोलुपता हेतु इस्तेमाल और नजरअंदाज करने की पराकाष्ठा प्रमुख हैं। जहाँ तक जन साझेदारी का प्रश्न है, इसके प्रति सभी स्तरों पर आम नागरिक पहले से ज्यादा जागरूक हैं ऐसा अध्ययन के दौरान पाया गया और उनकी तादाते तेजी से बढ़ रही है। लेकिन स्वार्थी तत्वों द्वारा मनोवैज्ञानिक दबाव भी आतंकवादी गतिविधियों के जन साझेदारी को प्रभावित करता आ रहा है। जहाँ तक सरकार का सवाल है, वर्त्तमन में Operation All Out', स्थलीय व नभीय सर्जिकल स्ट्राईक जैसे शानदार प्रयास पूर्णतः सफल कूटनीति का नतीजा बनकर सामने आये हैं जिसे जन–जन ने सराहा। साथ ही आतंकवादी घटनाओं पर लगाम लगाने की कसौटी पर भारत खरा उतरा। अब जन सरोकार का पहलू यह है कि ऐसी सफल कूटनीति और सर्जिकल स्ट्राइक होते रहने से आतंकवादियों का मनोबल भी टूटेगा और भारत अपनी सुरक्षा में सफलता के आयामों को चूमता रहेगा और विकास के पथ पर अग्रसर होता रहेगा।[6–8]

निष्कर्ष

अतः निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है आतंकवाद राज्य या समाज के विरुद्ध एक ऐसी गैर–कानूनी कार्रवाई है जिसका उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और प्रमुख रूप से राजनीतिक होता है। आतंकवाद न केवल अपने तात्कालिक शत्रु को अपितु सामान्य लोगों को भी डराने और उनमें भय एवं आतंक पैदा करने की कोशिश करके उन्हें अवपीड़ित एवं वश में करने का प्रयास करता है। इसीलिए आतंकवाद के मुद्दे को वैश्विक शांति एवं सुरक्षा तथा मानवता के लिए इस विषय पर सभी की एकजुटता

व जन सहयोग की नीति एक अनिवार्य आवश्यकता बन गई है जिसे परस्पर सहयोग के बिना खत्म करना ही एकमात्र समाधान है।

संदर्भ सूची

1. यादव, राम प्रकाश सिंह, 2011. 'भारत में आतंकवादः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'। सुरक्षा चिंतन, अंक 2 : 89–95.
2. माथुर, कृष्ण मोहन, 1991 'स्वातंत्रयोत्तर भारत में जनता का उत्तरदायित्व तथा भूमिका'। पुलिस अनुसंधान एवं विकास व्यूरो, नई दिल्ली।
3. त्रिपाठी, शंभूरत्न, 2009. 'भारतीय सामाजिक संरचना और संस्कृति', किताब महल, इलाहाबाद।
4. मिश्र, दीनानाथ, 2001. 'इस्लाम मुसलमान और आतंकवाद' दैनिक जागरण, बरेली 28 सितम्बर पृ0 10.
5. नरेश, 2003. 'भारतीय आतंकवाद'। साहित्य प्रकाशन, मयूर विहार, दिल्ली। पृ0 74–77.
6. चोपड़ा, सुरेन्द्र 1991, 'टेरेरिज्म– द एपिक ऑफ वायलेंस इंडिया' ICWA, New Delhi, Oct – Dec, पृ0 83.
7. सिंह, मनमोहन 2007. आंतरिक सुरक्षा–चुनौतियाँ, योजना। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली। फरवरी अंक, पृ0 06.
8. बड़ठाकुर, आई0 के0 2006. 'विकास की पहल'। योजना प्रकाशन, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली। दिसंबर अंक, पृ0 16–19.